(DHIND 01)

M.A. (Previous) DEGREE EXAMINATION, MAY – 2015

First Year

HINDI

Paper – I : History of Hindi Literature

हिंदी साहित्य का इतिहास

Time : 3 Hours **Maximum Marks: 80**

किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1) हिंदी साहित्येतिहास लेखन में नामकरण और कालविभाजन के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

2) आदि काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।

3) निर्गुण प्रेममार्गी शाखा की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उस में जायसी के स्थान को निर्धारित कीजिए।

4) हिंदी रामभक्ति शाखा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5) रीति काल की काव्य धाराओं और उन के प्रतिनिधि कवियों का परिचय दीजिए।

6) भारतेंदु मंडल के लेखकों के साहित्यिक अवदान पर एक सारगर्भित लेख लिखिए।

7) छायावादी हिंदी कविता की उपलब्धियों की समीक्षा कीजिए।

8) हिंदी प्रयोगवादी कवियों और उन की काव्य प्रवृत्तियों को समझाइए।

9) हिंदी नाटक साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

10) किन्हीं दो कवियों का परिचय दीजिए।

अ) अमीर खुसरो।

आ) कबीर दास।

इ) घनानंद।

ई) नागार्जुन।

□□□□

(DHIND 02)

M.A. (Previous) DEGREE EXAMINATION, MAY – 2015

First Year

HINDI

Paper – II : Theory of Indian and Western Literature

भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र

Time : 3 Hours **Maximum Marks: 80**

किन्हीं पांच प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1) ध्वनि संप्रदाय के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उसके प्रकारों को समझाइए।

2) अलंकार की अवधारणा को समझाते हुए अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्यों का परिचय दीजिए।

3) रसनिष्पत्ति पर प्रकाश डालिए।

4) वक्रोक्ति संप्रदाय के इतिहास को समझाते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

5) रीति क्या है? रीति और शैली के अंतर को समझाइए।

6) अरस्तु के काव्य सिद्धांतो पर प्रकाश डालिए।

7) आई. ए. रिचर्डस के मूल्य सिद्धांत की समीक्षा कीजिए।

8) टी.यस. इलियट के परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा संबंधी विचारों को समझाइए।

9) मार्कसवादी आलोचना की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

10) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए।

अ) मुक्तक काव्य।

आ) अमेरीका की नयी समीक्षा।

इ) उपन्यास के तत्व।

ई) महाकाव्य।

□□□□

(DHIND 03)

M.A. (Previous) DEGREE EXAMINATION, MAY – 2015

First Year

HINDI

Paper – III : Old and Medieval Poetry

प्राचीन एवं मध्य युगीन काव्य

Time : 3 Hours **Maximum Marks: 80**

प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

*शेष प्रश्नों **में** से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1) संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। ***[4×5=20]***

अ) जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नहि।
सब अंधि यारा मिटि गया जब दीपक देख्या माहि।।
हैरत हैरत है सखी रह्या कबीर हिदाइ।
बूंद समांणी समंद में सो कत हेरी जाइ।।

अथवा

कबीर सतगुरू ता मिल्या रही अधूरी सीख।
स्वांग जती का पहरि घरि घरि मांगै भीख।।
सतगुरू ऐसा चाहिए जैसा सिकलीगर होइ।
सबद मसकला फेरि करि देह द्रपन करे कोई।।

आ) हिम तो नंदघोष की बासी?
नाम गोपाल, जाति कुल गोपहि, गोप गोपाल-उपासी।।
गिरिवरधारी गोधनचारी, वृंदावन-अभिलासी।
राजा नंद, जसोंदा रानी, जलधि नदी जमुना सी।।
प्रान हमारे परम मनोहर कमलनयन सुखरासी।
सूरदास प्रभु कहाँ कहाँ लौं अष्ट महासिधि दासी।।

अथवा

हरि काहे के अंतर्यामी?

जौ हरि मिलत नहीं यहि औसर, अवधि बतावत लामी।।

अपनी चोंप जाय उठि बैठे और निरस बेकामी?

सों कह पीर पराई जानै जो हरि गुरडगामी।।

इ) मन अति भयो हुलास, विगसि जनु कोक किरन रवि।

अरून अधर तिय सधर, बिंब फल जानि कीर छवि।।

यह चाहत चख चकित, उह जू तक्किय झरप्पि झर।

चंच चंहुट्टिय लोभ, लियौ तब गहित अप्प कर।।

अथवा

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।।

मोरें मत बड नामु दुहु तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें।।

प्रौढि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रूचि मन की।।

ई) अजौं तरयौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इस अंग।

नाक-बास बेसरि लह्यो, परि मुकुतनु के संग।।

मकराकृति गोपाल कैं, सोहत कुंडल कान।

धर्‌यौ मनौ हिय -धर समरू, ड्योढी लसत निसान।।

अथवा

मोहन अनूप रूप सुंदर सुजान जू को,

ताहि चाहि मन मोह दसा महामोह की।

अनोखी खिलग दैया! बिछुरै तौ मिल्यौ चाहै,

मिले हू में मारे जारै, खरक बिछोह की।

2) विद्यापति की श्रृंगार भावना की समीक्षा कीजिए। ***[4×15=60]***

3) पृथ्वीराज रासो काव्य के पद्मावती समय की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4) कबीर के रहस्यवाद की समीक्षा कीजिए।

5) पठित काव्यांश के आधार पर जायसी की अभिव्यंजना कौशलता पर प्रकाश डालिए।

6) सूर दास के भ्रमर गीतों के रचना उद्धेश्य पर प्रकाश डालिए।

7) पठित काव्यांश के आधार पर तुलसी दास के भाव पक्ष का परिचय दीजिए।

8) बिहारी की श्रृंगार भावना पर प्रकाश डालिए।

9) घनानंद के स्वच्छंद प्रेम प्रवृत्ति का परिचय दीजिए।

10) रीति काल के काव्य में अभिव्यक्त दरबारी संस्कृति का परिचय दीजिए।

□□□□

(DHIND 04)

M.A. (Previous) DEGREE EXAMINATION, MAY – 2015

First Year

HINDI

Paper – IV : Hindi Prose - Drama, Novel, Stories and Essay

हिंदी गद्य, नाटक, उपन्यास, कहानी और निबंध

Time : 3 Hours **Maximum Marks: 80**

प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

*शेष प्रश्नों **में** से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1) संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। ***[4×5=20]***

अ) समीर की गति भी अवरूद्ध है, शरीर का फिर क्या कहना? परन्तु मन में इतने संकल्प और विकल्प? एक बार निकलने पाता तो दिखा देता कि इन दुर्बल हाथों में साम्राज्य उलटने की शक्ति है और ब्राह्मण के कोमल हृदय में कर्त्तव्य के लिए प्रलय की आंधी चला देने की भी कठोरता है।

अथवा

जिस पुत्र को एक क्षण भर आँखों से ओझल देखकर उन का हृदय व्यग्र हो उठता था, जिस के शील, बुद्धि और चरित्र का अपने पराये सभी बखान करते थे, उसी के प्रति उन का हृदय इतना कठोर क्यों हो गया।

आ) श्रद्धालु महत्व को स्वीकार करता है, पर भक्त महत्व की ओर अग्रसर होता है। श्रद्धालु अपने जीवन क्रम को ज्यों का त्यों छोडता है,पर भक्त उसकी काट–छांट में लग जाता है।

अथवा

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उस के रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाए। उन में से किसी के परिवार की सदय गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दुध पिला पिलाकर दो चार दिन जीवित रखा।

इ) जिस राज्य पर तुम्हारा रत्ती भर अधिकार नहीं था उसी को पाने के लिए तुम ने युद्ध ठाना, यह स्वार्थ का तांडव नृत्य नहीं तो और क्या है? भला किस न्याय से तुम राज्याधिकार की माँग करते थे?

अथवा

बडप्पन बाहर की वस्तु नहीं–बडप्पन तो मन का होना चाहिए, और फिर बेटा, घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जायेगी।

ई) इज्जत का आधार था, घर के दरवाजे पर लटका परदा। भीतर जो हो, परदा सलामत रहता। कभी बच्चों की खींच–खांच या बेदर्द हवा के झोंकों से उस में छेद हो जाते, तो परदे की आड से हाथ सुई धागा ले उस की मरम्मत कर देते।

अथवा

अर्ध शिक्षित और अल्प वेतन पानेवाले अध्यापकों से आप यह आशा नहीं कर सकते कि वह कोई ऊँचा आदर्श अपने सामने रक सकें। अधिक से अधिक इतना ही होगा कि चार–पाँच वर्ष में बालक को अक्षर ज्ञान हो जायगा।

2) 'निर्मला' उपन्यास में व्यंजित नारी जीवन की समस्याओं का परिचय दीजिए। ***[4×15=60]***

3) 'चंद्रगुप्त' नाटक की कथा–वस्तु पर प्रकाश डालिए।

4) स्पष्ट कीजिए कि आचार्य राम चंद्र शुक्ल जी के निबंध विषय प्रधान हैं या विषयी?

5) कहानी कला की दृष्टि से 'अपना–पराया' कहानी का विवेचन कीजिए।

6) 'श्रद्धा–भक्ति' निबंध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

7) 'निर्मला' उपन्यास की कथा वस्तु पर प्रकाश डालिए।

8) एकांकी कला की दृष्टि से 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

9) 'सोना' में व्यंजित महादेवी वर्मा के विचारों का परिचय दीजिए।

10) किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए।

a) निर्मला उपन्यास की संवाद योजना।
b) चंद्रगुप्त नाटक का चाणक्य।
c) 'परदा' कहानी का शीर्षक।
d) 'चिंतन चालू है' का व्यंग्य।

□□□□

(DHIND 05)

M.A. (Previous) DEGREE EXAMINATION, MAY - 2015

First Year

HINDI

Paper - V : Modern Poetry

Time : 03 Hours **Maximum Marks : 80**

सूचना: प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

शेष प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(4 x 8 = 32)

1) निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

अ) पलक लोचन की पडती न थी।
हिल नहीं सकता तन – लोम था।
छवि – रता बनिता सब यों बनी।
अपल निर्मित पुत्तलिका यथा।

अथवा

काम – मंगल से मंडित श्रेय,
सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उस को तुम भूल
बनाते हो असफल भवधाम।

आ) धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन, जिस के लिए सदा ही किया शोध।
जानकी, हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।
उह एक और मन रहा राम का जो न थका।

अथवा

शव को दे मह रूप, रंग, आदर मानव का?
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दे शव का?
गत – युग के बहु धर्म – रूढि के ताज मनोहर?
मानव के मोहांध Öदय में किये हुए घर?

अथवा

नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!
मेरा पग पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न–पराग झरा।

इ) युवती के लज्जा वसन बेच जब कर्ज चुकाये जाते हैं,

मालिक तब तेल फुलेल लगा, पानी सा द्रव्य बहाते हैं।

अथवा

युगों से हम अनय का भार ढोते आ रहे हैं,
न बोली तू मगर, हम रोज मिटते जा रहे हैं,
पिलाने को कहां से रक्त लायें दानवों को?
नहीं क्या स्वत्व है प्रतिरोध का हम मानवों को।

ई) किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं है।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप है स्त्रोतस्विनी के।
किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

अथवा

''नर या कुंजर''
मानव को पशु से
उन्होंने पृथक नहीं किया
उस दिन से मैं हूँ
छ्शुमात्र, अंध जर्जर पशु।

2) 'प्रियप्रवास' काव्य के रचना–उद्धेश्य का विवेचन कीजिए।। ***(4 x 15 = 60)***

3) आधुनिक महाकाव्य के रूप में 'कामायनी' की समीक्षा कीजिए।

4) 'राम की शक्ति पूजा' कविता के प्रबंध सौष्ठव को स्पष्ट कीजिए।

5) पंत की 'नौका विहार' कविता के भाव पक्ष की समीक्षा कीजिए।

6) महादेवी वर्मा की कविताओं में व्यंजित भाव-पक्ष का परिचय दीजिए।

7) 'हुंकार' के आधार पर दिनकर की क्रांदि चेतना को स्पष्ट कीजिए।

8) 'अंधा युग' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

9) 'नदी के द्वीप' कविता में व्यक्त अज्ञेय के विचारों पर प्रकाश डालिए।

10) किन्हीं दो वषियों पर टिप्पणी लिखिए।

a) पंत जी के प्रगतिवादी विचार
b) कामायनी का शीर्षक
c) महातेवी के रहस्यवादी विचार
d) निराला की सामजिक चेतना
e) अंधा युग की गांधारी।

●●●●●